Sub - Psychology
B.A. Part II (Hons)
Paper - III
Chapter - Aspects of Mind
Topic - Dynamic Aspects of Mind
By - Rishikant Jaiswal (Assistant Professor)
Dr. L.K.V.D College Tajpur, Samastipur.
Lecture Series No. - 9

Dynamic Aspect of Mind.

आधुनिक मनोवैज्ञानिकों में फ्रायड ने ही मन का अध्ययन वैज्ञानिक ढंग से किया। इनके अनुसार मन का स्वरूप गत्यात्मक है तथा इसके कई पहलू हैं। इन पहलूओं का ज्ञान विशेष रूप से संघर्ष की हालत में होता है। जब व्यक्ति एक से अधिक समान एवं विरोधी प्रेरकों का शिकार बन जाता है तो मन के विभिन्न पहलुओं का ज्ञान स्पष्ट रूप से होने लगता है। इसके साथ-2 व्यक्ति में परिवर्तन की सम्भावना भी बढ़ जाती है। मोटे तौर पर फ्रायड के अनुसार मन और व्यक्तित्व के दो पहलू हैं। 1. गत्यात्मक पहलू (Dynamic aspect) तथा आकारात्मक पहलू (Topographical aspect)। अब इन दोनों पहलुओं का विस्तारपूर्वक वर्णन किया जायेगा।

Teachers Signature.....

Scanned with CamScanner

मन का गत्यात्मक पहलू (Dynamic aspect of mind)

फ्रायड पहला मनोवैज्ञानिक था जिसने मन के गत्यात्मक स्वरूप का विस्तारपूर्वक अध्ययन किया। ब्राउन (Brown) के शब्दों में 'व्यक्तित्व के गत्यात्मक पहलू का अर्थ वह साधन है जिसके द्वारा मूल प्रवृत्तियों में उत्पन्न संघर्षों का समाधान होता है।'

गत्यात्मक पहलू को तीन भागों में बाँटा गया है (1) ईड (Id) (2) ईगो (Ego) (3) सुपर ईगो (Super Ego); इन तीनों का स्वरूप एक दूसरे से भिन्न है, इसलिए इनके बीच सदा संघर्ष चलते रहते हैं। इसी कारण व्यक्तित्व के संगठन में परिवर्तन होता है। संघर्ष किस प्रकार उत्पन्न होते हैं, उनका समाधान किस प्रकार होता है और इस सबका प्रभाव व्यक्तित्व पर किस प्रकार पड़ता है, इनकी जानकारी के ईड, ईगो, तथा सुपर ईगो को अलग-अलग समझना जरूरी है।

1. ईड (Id) - मन के गत्यात्मक पहलू का भाग है। इसे न तो समय का ज्ञान रहता है और न ही वास्तविकता का। बच्चों में केवल ईड ही रहता है; यही कारण है कि बच्चे अपनी सारी इच्छाओं को पूरा करना चाहते हैं। जब ऐसी इच्छाओं की संतुष्टि नहीं हो पाती है तो बच्चे को निराशा होती है। फलतः उन्हें वास्तविकता का ज्ञान होने लगता है और इसी के साथ ईगो तथा सुपर ईगो का विकास होने लगता है।

Teachers Signature.....

Scanned with CamScanner

ईड के स्वरूप पर प्रकाश डालते हुए रिचार्ड डब्लू॰ नाइस (Richard W. Nice) ने लिखा है:- "ईड मन का वह अचेतन आदिम भाग है जिसमें जन्मजात प्रेरणाएँ मूल प्रवृत्तियाँ, इच्छाएँ एवं अभिलाषाएँ रहती हैं जो उचित माँगों और नियंत्रण से मुक्त रहती हैं।" सरल शब्दों में कहा जाता है कि ईड हमलोगों के अन्दर पशुवत एवं बन्धनमुक्त प्रेरणाएँ हैं।

Teachers Signature.....

Scanned with CamScanner